'बिग लिटिल बुक अवार्ड'*

चित्रकार अतनु राय व लेखिका माधुरी पुरन्दरे का साक्षात्कार

I. अतनु राय

सवालः आपके खयाल से बाल सहित्य के क्षेत्र में पुरस्कार किस तरह की भुमिका निभा सकते हैं?

जवाबः इस तरह के पुरस्कार को अपनी पहचान बनाने और स्वीकार करने में एक लंबा रास्ता तय करना होगा और यह कि 'देख के भी सिखा जा सकता है'। यहां यह जानना महत्वपूर्ण होग कि दृश्य हर हाल में पाठ से कहीं बेहतर है। प्रकाशक भी हमेशा पाठ केंद्रित किताबों को ही महत्व देते हैं और इससे कहीं ज्यादा अफसोस की बात तो यह है कि उनमें से ज्यादातर नेत्रहीन अनपढ़ हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि यह पुरस्कार चित्रकारों और प्रकाशकों के बीच एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा पैदा करेगा ताकि वह बच्चों के लिए एक बेहतर और अच्छा दृश्य साहित्य छापने की तरफ भी ध्यान दें।

सवालः आप बच्चों के इलस्ट्रेटर कैसे बने?

जवाबः यह मेरी खुशनसीबी थी कि मैंने दिल्ली के वायु सेना सेंट्रल स्कूल में अध्ययन किया, जहां कला पर विशेष जोर दिया जाता था और मेरी इच्छा भी थी कि मैं कला का व्यक्ति बनूं। साठ के दशक में इस तरह की रुचि प्रकट करना औरताना किस्म की बात मानी जाती थी। स्कूल में मेरे पास विज्ञान और उच्च गणित थी और मैं एथलेटिक्स टीम का कप्तान भी था। यहां मेरे कोच ने मुझे इस विषय पर दिशा दिखाई और सुझाव दिया कि मुझे इसी को आगे जीवन में चुनना चाहिए, मगर उन्होंने यह भी गांठ लगाई कि मैं दिल से एक एथलिट ही हूं। जब मेरा दाखिला आर्ट कॉलेज में हुआ तो मैंने अपने-आपको पूरी तरह इस काम के लिए सौंप दिया। भाग्य से राजपाल एंड संस ने (उस जमाने का चर्चित और सफल प्रकाशन) मुझे खोज निकाला। जिसकी खास बात यह थी कि उसके मालिक और संपादक दोनों ही कला से खूब परचित थे। मेरे जैसे चित्रकार के करियर को बनाने में उन दोनों का बड़ा योगदान है। अमृता प्रीतम, अज्ञेय, विष्णु प्रभाकर, नागार्जुन और अन्य लोगों से मिलने का अवसर मिला जिन्होंने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला है।

80 के दशक के आखरी में मैंने फ्रैंक ब्रदर्स के लिए अक्षरों वाली एक किताब को संपादित किया था। इस किताब ने बड़ी शानदार सफलता कमाई थी जिसके बाद मैंने इस तरह का काम नहीं देखा। 1989 में मेरी

* यह अवार्ड 'पराग' द्वारा वर्ष 2016 से शुरू किया गया है। पराग टाटा ट्रस्ट्स की एक पहल है। पराग के जरिए मुख्यतः बच्चों के साहित्य को विकसित करने व आगे बढ़ाने का काम किया जाता है। इस अवार्ड के तहत भारतीय भाषा के एक लेखक व एक चित्रकार को सम्मानित किया जाता है। हर वर्ष यह अवार्ड किसी एक भारतीय भाषा में लिखने वाले लेखक को मिला करेगा। पुरस्कार के लिए वर्ष 2016 की भाषा मराठी थी। इस वर्ष लेखन के लिए यह पुरस्कार मराठी की जानी-मानी लेखिका माधुरी पुरन्दरे को और चित्रों के लिए सुप्रसिद्ध चित्रकार अतनु राय को मिला है।

दो किताबों 'काजू' और 'शू' को चिल्ड्रन च्वाइस पुरस्कार मिला। उस समय तक मैं कार्टून वाली पाठ्यपुस्तकों के साथ बच्चों की पुस्तकों के लिए भी पूरी तरह से चित्रकारी करने लगा था। ऐसे में मेरा उद्देश्य बच्चों को एक तरह का आराम देना था। मैंने अपनी चित्रकारी में हास्य जो कि एक प्राकृतिक उपहार है उसको इस्तेमाल किया। उस समय लोग बच्चों के लिए आसान टेक्स्ट नहीं लिखा करते थे। उन्हीं दिनों मैंने यह भी महसूस किया कि अगर आप बच्चों के लिए लिखना चाहते हैं तो इसके लिए अपने अहंकार को दूर फैंकना होगा और बच्चों के दृष्टिकोण से लिखना होगा।

सवालः बच्चों के लिहाज से आपके पसंदीदा रचनाकार कौन-कौन हैं और क्यों?

जवाबः इतने कमाल के चित्रकारों की लिस्ट में से अपने पसंदीदा लोगों को चुनना एक मुश्किल काम है। परन्तु मुझे सत्यजीत रे हद से ज्यादा पसंद आते हैं। वही अकेले एक ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने चित्रकारी के लिए हर माध्यम का इस्तेमाल किया है। उनके चित्र, टाइपोग्राफी, कहानियां और विस्तार पर ध्यान जैसी चीजें तो अति उत्तम और सराहे जाने के काबिल हैं।

सवालः इस क्षेत्र में नए रचनाकारों को कैसे बढ़ावा मिल सकता है?

जवाबः अपनी यात्राओं और कार्यशालाओं के दौरान मैंने एक बात हमेशा पाई कि हमारे यहां प्रतिभा की कमी नहीं है। उनमें से तो अधिकांश ऐसे हैं जो प्रशिक्षित नहीं हैं और जिनमें सही रवैयों की भी कमी है। ज्यादातर आर्ट कॉलेजों में चित्रकारी एक अलग से विषय नहीं है जिस पर ध्यान देने की जरूरत है। सालों से यही मेरी चिंता रही है। पूरा का पूरा बोझ कुछ लोगों पर आ गया है। मेरे पास तो दो साल का इकट्ठा हुआ काम लगभग हमेशा रहता है। इस तरह के दबाव को कम करने के लिए मैंने एक अकादमी खोलने का इरादा किया है। चित्रकारों के लिए तीन साल की मेहनत के बाद रियाज अकादमी स्थापित हुई जिस के पहले बैच ने तो बहुत ही काम किया और जो प्रकाशन की दुनिया में भी बदलाव ला रहे हैं।

सवालः कोई ऐसा प्रोजेक्ट जिसे आप करना चाहेंगे (ड्रीम प्रोजेक्ट)?

जवाबः शायद हां! मैं भारत की आदिवासी कहानियों पर काम करना चाहता हूं। इसी तरह मौखिक और लोक कहानियां भी हैं जिन पर अगर काम नहीं किया गया तो वे भी धीरे-धीरे खत्म हो जाएगी। जाहिर है कि इन सबको ढूंढना, चुनना, अनुवाद करना, उनके प्रासंगिक संदर्भ को खोजना और पेश करना एक कठिन काम होगा। मेरा सपना एक अच्छी-सी टीम तैयार करना है जो विश्व बाजार में इस काम को अच्छे उत्पादन के साथ करे। मेरा दूसरा सपना रूपांतरित पौराणिक कहानियों पर किताब लिखने का है जिसके पीछे का उद्देश्य पौराणिक कहानियों को वर्तमान संदर्भ देना, जिनमें उनके चरित्र आज के साधारण मनुष्यों की तरह हों और आज की ही वेशभूषा में हों। आज की जरूरतों के अनुसार बनाकर पेश किया जाए। यह एक सही सिम्त में मेहनत होगी, जिसकी बाजार में मांग भी होगी।

सवालः आप आज के लेखकों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

जवाबः मेरा संदेश थोड़ा कठिन और तीखा है। मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर आप पूरी लगन, मेहनत और ईमानदारी के साथ काम करना चाहते हैं तभी इस पेशे को चुनिए। अंदर से एक बच्चा होने के साथ आपको हमेशा सब बातों की जानकारी होनी चाहिए क्योंकि अपेक्षाकृत यह एक धीमा और मांग करने वाला पेशा है। इसमें समय सीमाएं तो कई बार जान लेवा होती हैं। अपने कौशल को हमेशा अपग्रेड करते रहना इस पेशे की आवश्यकता है।

सवालः आज हमारे देश में बाल-साहित्य से संबंधित क्या समस्याएं हैं?

जवाबः चित्रकारी को शैली के तौर पर नजरंदाज किया गया है, जबकि बच्चों की शैली में दृश्य पहले आते हैं क्योंकि पढ़ते समय बच्चे सबसे पहले दृश्य को ही देखते हैं। इसीलिए छपने-छापने की मानसिकता में बदलाव की जरूरत है। बच्चों की किताबों में 90 प्रतिशत हिस्सा दृश्य से भरा होना चाहिए। मगर प्रकाशकों की रुचि टेक्स्ट छापने में होती है। प्रकाशन के व्यवसाय में आर्ट संपादक पर जोर देना चाहिए। इस तरह का चलन दूसरे देशों में देखा है

II. माधुरी पुरन्दरे

सवालः आपको बच्चों का लेखक बनने के लिए किस चीज ने प्रेरित किया?

जवाबः लगभग 25-30 साल पहले हमने वनस्थली में बालवाड़ी (पूर्व प्राथमिक स्कूल) के बच्चों के साथ गांवों में काम किया। वहां औपचारिक स्कूली व्यवस्था में परेशानी आ रही थी और बहुत सारे बच्चे स्कूल छोड़ रहे थे। हमारे पास प्रशिक्षित शिक्षकों की बहुत ज्यादा कमी थी क्योंकि ग्रामीण महिलाओं के लिए शहरी केन्द्रों में जाकर छह महीने का प्रशिक्षण लेना संभव नहीं था और न ही यह संभव था कि शहरों से महिलाएं आकर गांवों में पढ़ाना शुरू कर दें। इस पृष्ठ भूमि के चलते हमने सोचा कि क्यों न गांवों में ही महिलाओं को प्रशिक्षण दिया जाए? इस तरह हमने महिलाओं को प्रशिक्षण देना शुरू किया जिसको उन्होंने काफी पसंद किया और साथ ही साथ लड़कियों ने भी इस प्रक्रिया में काफी रुचि ली। जब हमने इन लड़कियों के साथ काम करना शुरू किया तो हमने महसूस किया कि हमें उनकी संवेदनशीलता को बढ़ाने की जरूरत है। इसके अलावा, उनके अंदर आत्म-सम्मान को बढाने की जबरदस्त आवश्यकता थी तथा उन्हें एक ऐसे जागरूक नागरिक के रूप में विकसित करना था जिनके कंधे पर भविष्य की पीढ़ी को आकार देने की जिम्मेदारी है। हमने एक आठ पृष्ठ का एक द्वैमासिक ऐसा न्यूजलेटर निकालना शुरू किया जिसमें विविध प्रकार की सामग्री थी। इसके जरिए उन्हें अपने अनुभवों, कठिनाइयों और नवाचारों को साझा करने का एक मंच मिला। जल्द ही हमें यह एहसास हुआ कि वहां बच्चों के लिए कहानियों और कविताओं जैसी सामग्री न के बराबर थी। इसलिए हम उसी न्यूजलेटर में 'छोट्यांची वनस्थली' नाम से एक विशेष अनुभाग निकालने लगे। मगर बहुत जल्द हमें ग्रामीण बच्चों के लिए लिखने वालों की समस्या का सामना करना पड़ा, क्योंकि शहरी लेखक इन बच्चों की दुनिया से पूरी तरह से अनजान थे। इस परिस्थिति ने मुझे लिखने पर मजबूर किया।

चूंकि मैंने जे. जे. आर्ट स्कूल से पेंटिंग सीखी थी, इसलिए मैंने खुद ही इस खंड को इलस्ट्रेट करना शुरू कर दिया। मैंने अंग्रेजी और फ्रेंच की अच्छी खासी सामग्री पढ़ी ताकि बच्चों के लिए लिख सकूं। प्रारंभ में तो मैं अन्य स्रोतों से भी खूब कहानियां लेती थी और उनको अपने अनुसार ढाल लेती थी।

सवालः आपकी नजर में बच्चों के लिए लिखने के लिए क्या चीजें जरूरी हैं?

जवाबः चूंकि बच्चे हमसे ना तो मानकों की मांग कर सकते हैं और ना ही आलोचना कर सकते हैं तो इस वजह से हम लिखते समय निष्ठाहीन नहीं हो सकते। यहां तक कि अगर आपको बड़ों के लिए समय सीमा आदि का सामना करने में समझौता करना हो तो आप कर सकते हैं मगर यह बच्चों के संदर्भ में कभी भी नहीं करना चाहिए।

सवालः आप बच्चों के लेखकों और चित्रकारों के लिए क्या संदेश देना चाहेंगी?

जवाबः इस सन्दर्भ में किसी भी लेखक को बच्चों की दुनिया को समग्रता में समझने की जरूरत है क्योंकि बच्चे किसी अलग थलग दुनिया में नहीं रहते हैं। वे दरअसल वयस्क लोगों से घिरे होते हैं और लगातार उन लोगों के माहौल से अंतःक्रिया करते रहते हैं। पहले के समय में इस प्रकार की अंतःक्रिया का माहौल संयुक्त परिवार के भीतर मिल जाया करता था जिसमें बच्चे को सभी उम्र के वयस्कों व दूसरे बच्चों के साथ अंतःक्रिया करने का मौका मिल जाता था। बच्चों को इस नज़र से देखने में दिक्कत है कि उनके पास पूरा का पूरा अपना ही नज़रिया होता है।

लेखक को बहुत ही सतर्क और गहन अवलोकन करने की जरूरत होती है। बच्चों को उनकी दुनिया से काट कर देखना ठीक नहीं है उदाहरण के लिए केवल स्कूली दुनिया में देखना, उनकी जिंदगी के अनेक रंग होते हैं। एक लेखक के लिए यह भी जरूरी है कि वह दूसरे लेखकों को पढ़े।

सवालः बच्चों का आपके साथ क्या संबंध हैं और इसने कैसे आपके लेखन को प्रभावित किया है?

जवाबः मेरा खुद कोई अपना बच्चा नहीं है और सिर्फ यही नहीं बल्कि मेरे जीवन का एक बड़ा हिस्सा बच्चों से दूर रह कर बीता है। वास्तव में तो बच्चों को लेकर मेरे अन्दर ज्यादा धैर्य भी नहीं है। बाल साहित्य के लिए (और अन्यथा जीवन को समझने के लिए भी) मैंने काफी पढ़ा और अवलोकन किया है। मैंने खुद में संवेदनशीलता का विकास गहन अध्यन से किया है इस अध्ययन में क्लासिकल साहित्य के अलावा मैंने अच्छे खराब हर तरह का साहित्य पढ़ा हैं। मेरी आदत है कि मैं नई चीजों को समझने के लिए बार-बार और बारीकी से पढ़ती हूं। मैंने थिएटर और फिल्मों में भी खुद को खपाया है और चीजों को जज्ब करने के लिए मैंने खुद को सभी प्रकार के प्रभावों के लिए खुला रखा है। इन्हीं सब चीजों ने 'वाचू आनंद' लिखने में सबसे ज्यादा योगदान दिया।

सवालः आप अपने युवा पाठकों को बहुत सम्मान देती हैं और ऐसा लगता है कि आप उनके दिलों में जगह बनाने में सफल रही हैं। बच्चों से संवाद किए बिना भी आप उन्हें कैसे इतनी अच्छी तरह से समझ लेती हैं?

जवाबः मैं एक युवा व्यक्ति के रूप में अपनी खुद की चेतना को देखती हूं और मैं यह भी देखने की कोशिश करती हूं कि जिन चीजों को मैंने पढ़ा है उनका मुझ पर क्या असर पड़ा है, अब वे चाहे दर्दनाक हों या हर्षित करने वाली हों या किसी भी रूप में मुझे प्रभावित करने वाली रही हों। उन दिनों, बच्चों और बड़ों के बीच कोई खास बात-चीत नहीं हुआ करती थी। युवा लोगों को खुद से अपने जीवन की राह चुनने के लिए छोड़ दिया जाता था। किसी ने भी मुझे जीवन को लेकर मेरे जो सवाल थे उनको हल करने में कोई मदद नहीं की। ऐसे समय में यह साहित्य ही था जिसने मुझे मेरे सवालों के जवाब ढूंढने में मदद की। ऐसे माहौल में मैंने लेखक/कवि के साथ बहुत ही व्यक्तिगत संबंध और रिश्ता बनाया। जैसे विजय तेंदुलकर या कुमार गंधर्व की मौत मेरे लिए एक व्यक्तिगत दुःख की बात थी। जरूरी नहीं था कि इसके लिए मुझे किसी भी व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से अच्छी तरह जानना अनिवार्य हो।

बच्चों के लिए खोजबीन करना सीखने के लिहाज से महत्वपूर्ण होता है। इसीलिए हम बच्चों की सामग्री किसी खास दायरे में परिभाषित नहीं कर सकते। जब मैंने 'वाचू आनंद' के विभिन्न अंशों का चयन कर रही थी तब उसके बहुत से अंशों को लेकर मतभेद था। कुछ लोगों को लगा कि 'बच्चे इनको समझने में सक्षम नहीं होंगे'। मुझे नहीं लगता कि किसी खास आयु के बच्चों के लिए क्या उपयुक्त है इसका चुनाव हम इतनी सख्ती से कर सकते हैं। उन्हें हर तरह की सामग्री को पढ़ने का मौका मिलना चाहिए। अगर वह उन्हें पसंद आएगी तो वे उसे पढ़ेंगे। अगर वे उसे इस वक्त पूरी तरह से समझ नहीं पाते हैं तो कोई बात नहीं है, उसे अगले साल समझ कर पढ़ लेंगे।

सवालः आपके हिसाब से समाज में बच्चों के साहित्य का दर्जा बढ़ाने के लिए किया जा सकता है?

जवाबः मैंने कभी भी पैसे के बारे में परवाह नहीं की क्योंकि मुझ पर किसी तरह की कोई जिम्मेदारी नहीं हैं और काम तो मैंने हमेशा अपने आप के लिए ही किया। परन्तु अन्य लोगों को पैसे और मान्यता दोनों की जरूरत होती है इसलिए समाज में उन्हें पैसा और उनके साहित्य को दर्जा दोनों मिलना जरूरी है।

लोगों को यह समझना चाहिए कि यह काम भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि बड़ों के लिए चीजें छापना। बच्चों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले काम शुरू करने की जरूरत है। अच्छे काम के बाद ही हम बच्चों पर इसके प्रभाव को देख सकते हैं। मैंने 16-17 साल के बच्चों के लिए लिखा और गुणवत्ता से कोई समझौता नहीं किया। भले ही 1987 में किया गया काम पुस्तकों के रूप में 2002 में छपा। मैंने कई लोगों को कहते हुए सुना है कि 'आपके लेखन के कारण हमारे बच्चे बालवाडी में आते हैं'। मुझे लगता है कोरी बातों के बजाए मेहनत करने से ही बदलाव आ सकता है।

सवालः आपकी नजर में इस क्षेत्र के साथ मुख्य समस्याएं क्या हैं?

जवाबः मराठी बच्चों के साहित्य के सन्दर्भ में अगर मैं कहूं तो अक्सर लोग समय की नजाकत को नहीं समझते हैं। सच्चाई तो यह है कि लोग ना ही समय के साथ बदलाव को पसंद करते हैं और ना गुणवत्ता के काम की जरूरत को समझते हैं। यह समय और समर्पण की मांग करता है जो ज्यादातर लोगों के पास नहीं है। इसके अलावा 7-8 साल के बच्चों के लिए सामग्री खोजना आसान है लेकिन 9-14 वर्ष के बीच के किशोरों के लिए बहुत कम लिखा गया है जब वे न तो बच्चे होते हैं और न ही वयस्क। इस संधी काल के लिए अधिकतम सामग्री चाहिए क्योंकि इस समय तक बच्चे ठीक से पढ़ना सीख चुके होते हैं। वे अपने पढ़ने के लिए सामग्री ढूंढ़ सकते हैं, चुन सकते हैं। इसलिए इस अवस्था में अगर उनको अच्छा साहित्य पढ़ने को नहीं दिया गया तो पूरी संम्भावना है कि उनकी पढ़ने-लिखने की आदत वयस्क होने तक उनका साथ देने की बजाए इसी उम्र में छूट जाए।

किशोरों के मामले में हमें बहुत ही समझदारी से काम लेना होगा। हम किशोरावस्था की अपनी समझ के आधार पर कुछ भी उनके लिए नहीं लिख सकते। हमें उनके जीवन की समस्याएं, रिश्ते और अन्य महत्वपूर्ण चिंताओं को भी ध्यान में रखना होगा। विषय, भाषा, और बिंब विधान को बहुत बारीकी से चुनना होगा। आमतौर पर किशोरों के लिए या तो बहुत कठिन, संस्कृतनिष्ठ भाषा का इस्तेमाल किया जाता है या बहुत ही सरल भाषा का।

सवालः आप बच्चों के लिए बनाए जा रहे इलस्ट्रेशन/चित्रों के बारे में कुछ कहना चाहेंगी?

जवाबः हमें दृश्य भाषा पर सोचना चाहिए जिससे बच्चे बहुत आसानी से रिश्ता बना लेते हैं। चित्रों को मात्र भाषा से कला में 'अनुवाद' या 'लिप्यांतरण' नहीं होना चाहिए। कई बार तो ऐसा भी होता है कि चित्रकार टेक्स्ट पढ़ने का कष्ट भी नहीं करते कि उन्हें यह पता लग सके कि एक शेर की तस्वीर बनानी है या एक पक्षी की बल्कि वे सीधे पूछ लेते हैं और बिना कहानी से संबंध बिठाए चित्र बना देते हैं। उन्हें पंक्तियों के बीच खाली छूटी जगहों को भरने के लिए सुनना, पढ़ना और सोचना होगा। कला को टेक्स्ट या पाठ में इजाफा करना चाहिए उसका पूरक बनना चाहिए।

सवालः बिग लिटिल बुक अवार्ड मिलने पर आप कैसा महसूस कर रही हैं?

जवाबः इस पुरस्कार से सम्मानित किए जाने पर मैं बहुत खुश हूं और पराग इनिशिएटिव को सराहना चाहती हूं। जिसने बच्चों के साहित्य को इतने बड़े प्लेटफॉम पर जगह दी है। ◆

परिचय अतनु रायः इनके द्वारा बच्चों की सौ से भी अधिक किताबों में चित्र बनाए जा चुके हैं। इनके चित्रों में एक किस्म की गति होती है और उनमें कार्टून शैली का मिश्रण होता है। कम से कम रेखाओं में चित्र बनाकर भी वे उनमें एक जादुई असर पैदा कर देने वाले चित्रकार हैं।

परिचय माधुरी पुरन्दरेः इन्होंने मराठी में बच्चों व किशोरों के लिए विपुल साहित्य की रचना की है। यश सीरीज, राधाचे घर, बाबाच्या मिशा, वाचूआनन्द जैसी सैकड़ों रचनाएं बेहद लोकप्रिय हैं। इनकी रचनाओं में बच्चों के आपसी संबंध, उनके डर, आनन्द, सुख-दुःख आदि समाए रहते हैं।

भाषान्तर : अबु ओसामा